P-1 | R.M.M. Law College - Saharsa.
Manvendra Mandal | Hindu Marriage Act
parttime Lecturer | Part - I

हिन्दू धर्म के मानने वालों में विवाह की रस्मैं (पद्धति) रीतियाँ और कर्मकाण्ड — (धारा-7)

हिन्दुओं में विवाह अनुष्ठापित करने के लिए भिन्न-भिन्न रस्में प्रचलन में है, लेकिन जो मुख्य रीति सभी अनुयायियों में प्रचलित है वह है अग्नि को साक्षी मानकर वर एवं वधु का अग्नि के सात फेरे लगाना जिसे सप्तपदी कहा जाता है। लेकिन यह जरूरी नहीं कि हर हिन्दू समुदाय में सप्तपदी की प्रथा प्रचलन में हो। जिस समुदाय में सप्तपदी प्रचलन में नहीं है उस समुदाय के प्रचलित रीति-रिवाजों को पूर्ण करने पर भी विवाह अनुष्ठापित माना जायगा।

हिन्दुओं में विवाह को धर्म का एक अंग माना गया है। चूँकि विवाह को एक संस्कार समझा जाता है इसलिए इसमें वेदमंत्रों का उच्चारण अग्नि को साक्षी मानकर किया जाता है। विवाह के लिए आवश्यक रीतियों एवं कर्मकाण्डों में सप्तपदी सबसे मुख्य है। प्रथम पाणिग्रहण की रीति पूरी की जाती है जिसमें वर वधु के सामने खड़ा होकर उसका हाथ पकड़ कर कुछ मंत्रों का उच्चारण करता है जिसका अर्थ यह है कि वर-वधु को कहता है कि वह वधु के सुखमय [redacted] सौभाग्य के लिए उसका हाथ ग्रहण करता है+ और वर-वधु बुढ़ापे तक साथ-साथ सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। फिर दूसरे मंत्र का उच्चारण किया जाता है जिसका अर्थ है कि वर-वधु को कहता है कि उसने वधु का जो हाथ पकड़ा है मानों स्वर्ग का पदार्पण और वधु से कहता है कि वह उसकी धर्मपत्नी है और वह उसका धर्म का पति है। तीसरे मंत्र का जो उच्चारण वर करता है उसका अर्थ है कि वर-वधु साथ-साथ सौ वर्ष तक जीवित रहे+ और दोनों से उत्पन्न संतान सुखमय हो + और जो अंतिम मंत्र वर उच्चारण करता है उसका भाव यह है कि दोनों वर वधु अपने कर्तव्यों को तन-मन-धन से इसप्रकार पूर्ण करने में कभी पीछे नहीं रहेंगे। इस प्रकार कुल 6 मंत्रों का उच्चारण

P-2 हिन्दू धर्म के मानने वालों में विवाह की रश्मांगलिगत रीतियाँ और कर्मकाण्ड-

वर-वधू का हाथ पकड़ कर विवाह के समय करता है जिसे पाणिग्रहण कहा जाता है।

सप्तपदी की रस्म विवाह की सबसे मुख्य रस्म है, सप्तपदी में वर-वधू पहले खड़े होते हैं उसके बाद वर अपना दाहिना हाथ वधू के दाहिने कंधे पर रखता है और कुछ मंत्रों का उच्चारण किया जाता है इसके बाद मन्त्रोच्चारण के साथ-साथ वर एवं वधू एक साथ सात कदम चलते हैं इस तरह सात पद पूर्ण होने पर सप्तपदी की रस्म पूरी होती है। जो सात फेरे लगाये जाते हैं उनमें प्रथम फेरे का अभिप्राय यह होता है कि वर-वधू से कहता है तेरा मन मेरे मन के अनुकूल हो, परमात्मा तुम्हें मेरे अनुकूल बनाये। दूसरे कदम का यह अभिप्राय है कि दोनों मिलकर शारीरिक बल का संपादन करें, एक दूसरे के सुख-दुख में सहायक हों, तीसरे फेरे में यह कहा जाता है कि दोनों मिलकर संतान का पालन करें, इसी तरह अगले कदम में यह संकल्प लिया जाता है कि दोनों मिलकर प्राकृतिक परिस्थिति एवं सामाजिक स्थिति का सामना करें। फिर अगले कदम का अभि-प्राय यह है कि सामाजिक जीवन में और गृहस्थ आश्रम में ऋतु अनुकूल भी होती है प्रतिकूल भी, मित्र अनुकूल भी होते हैं और प्रतिकूल भी। दोनों वर-वधू एक दूसरे के बराबर रहेंगें। इस प्रकार अन्तिम कदम में भी दोनों वर-वधू एक दूसरे को विवाह सूत्र के बन्धन में स्वीकारते हैं तथा एक दूसरे की सहायता से गृहस्थाश्रम के उद्देश्य पूरे करने के संकल्प लेते हैं।

इस प्रकार सप्तपदी का अभिप्राय यही है कि गृहस्थाश्रम के कुछ उद्देश्य हैं जिनको पूरा करने के लिए वर-वधू दोनों को विवाह के सूत्र में बँधने के बाद कदम से कदम मिला कर साथ चलना होगा। इसका वर्णन मंत्रों में सात प्रकार से किया गया है जो सप्तपदी के समय उच्चारण किये जाते हैं। इन मंत्रों का अर्थ संक्षेप में यही है कि वर एवं वधू अन्न, बल, धन, सुख, प्राकृतिक परिस्थिति तथा सामाजिक परिस्थिति में हर तरह से पूर्ण हों। दोनों को मिलकर अन्न प्राप्त करना होगा, दोनों को मिलकर शारीरिक बल का संपादन करना होगा, दोनों को मिलकर धन को खर्च एवं जमा करना होगा। दोनों को मिलकर एक दूसरे के सुख-दुख में सहभागी होना होगा।

Scanned with CamScanner

P-3 हिन्दू धर्म के मानने वालों में विवाह की रस्में रूढ़िगत रीतियाँ और कर्मकाण्ड
इस प्रकार सप्तपदी के पूर्ण होने पर हिन्दू विवाह पूर्ण माना जाता है। रघुनाथ बनाम विजया एवं अमरनाथ दे बनाम लज्जा देवी के वाद में न्यायालय ने यह मत व्यक्त किया कि हिन्दू विवाह एक संस्कार है संविदा नहीं।

Scanned with CamScanner